आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में नारीवाद : डॉ भीमराव अम्बेडकर के विचारों के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के सामाजिक विज्ञान संकाय, राजनीति विज्ञान विभाग, में

पीएच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध सार

शोधार्थी

राकेश कुमार ठाकुर

पंजीयन संख्या : ....

राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ. जितेन्द्र आर्यन
(सहायक अध्यापक) राजनीति विज्ञान विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

मार्च, 2024

परिचय

नारीवादी विचारधारा प्रमुख रूप से स्त्री एवं पुरुष के बीच हो रहे भेदभावों से जुड़ी है। वस्तुतः नारीवाद स्त्रियों की भूमिका और उनके अधिकारों से संबंधित है। नारीवादी अवधारणा का आरंभ इस तथ्य के साथ होता है कि स्त्रियां पुरुषों की तुलना में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में हीनता की स्थिति में है। नारीवाद वर्षों से चली आ रही स्त्रियों की पराधीनता एवं उनके प्रति हो रहे अन्याय का प्रतिकार एवं विरोध कर उन्हें समाज में पुरुषों के बराबर खड़ा करने का विचार है। नारीवादियों का यह मत है की प्रकृति ने नैसर्गिक रूप से स्त्री एवं पुरुष की शारीरिक बनावट में जो भेद किया है इस भेद को सामाजिक स्थिति का आधार बना लेना अतार्किक एवं अन्याय पूर्ण है।

प्राचीन काल से ही स्त्रियों को समाज में वह मान्यता नहीं दी गई जो मान्यता पुरुषों को मिली है। वे प्रारंभ से ही सामाजिक हीनता के दायरे में जी रही हैं। नारीवादी इस विचार को खारिज करते हैं कि स्त्री एवं पुरुष के बीच भेद प्रकृति प्रदत्त है बल्कि उनके अनुसार पुरुष और स्त्री की भिन्नता सामाजिक, सांस्कृ तिक, मूल्यों एवं विचारधाराओं की उपज है। ये सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएं स्त्रियों को पुरुषों के पराधीन करती हैं एवं समाज में पितृसत्तात्मकता का बीज बोती है। निष्कर्षतः नारीवादियों का यह मत है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था कृत्रिम है और इसे निश्चय ही चुनौती दी जानी चाहिए।

भारतीय समाज की संरचना पश्चिमी समाज से भिन्न है। अतः भारत का नारीवादी आंदोलन पश्चिम में उपजे नारीवादी आंदोलन से इत्तर है। भारत के नारीवादी आंदोलन को 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलन एवं राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा जा सकता है। भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ परंपराएं जैसे देवदासी प्रथा ,सत्ती प्रथा, बाल विवाह का उन्मूलन ही भारतीय नारीवाद का प्रथम चरण था।

राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान आदि समाज सुधारक एवं विचारकों ने स्त्रियों से जुड़े हुए प्रश्नों को काफी प्रमुखता दी तथा कानूनी सुधारो एवं विभिन्न सक्रिय संगठनों के सहयोग से विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्री अधिकार प्राप्त करने की दिशा में समर्पित होकर प्रयास किए।

साहित्य की समीक्षा :

भारत में पिछले 75 सालों में भारतीय संविधान में वर्णित प्रावधानों एवं नारीवादी गतिविधियों ने 5 हजार साल से निरंतर चली आ रही पितृसत्तात्मक व्यवस्था को सफल चुनौती प्रदान की है ।आधुनिक भारतीय नारीवादी चिंतन से संबंधित साहित्य समीक्षाएं निम्न हैं : –

(1) **कृष्णास्वामी** *के विध्वंसक आध्यात्मिकता –: **"मध्यकालीन भारत में संत–कवयित्री के रूप में महिला"***

महिला अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय मंच खंड 16, अंक 2, मार्च–अप्रैल 1993, पृष्ठ 139–147 (1993) के अनुसार आर्य संस्कृति के प्रभुत्व वाले समाजों में महिलाओं की लैंगिकता, श्रम एवं उर्वरता पर बेहद सख्त नियंत्रण रहा है। द्रविड़ संस्कृति में आर्य संस्कृति की तुलना में महिलाओं को अपेक्षाकृत कम तीव्र पितृसत्तात्मक समाज का सामना किया है।

(2) **वीणा (1996)** *ने अपने शोध कार्य जिसका शीर्षक **"ए फील्ड ऑफ वन्स ऑन : जेंडर एंड लैंड राइट्स इन साउथ एशिया"*** में यह कहा कि महिलाओं के मानव अधिकार पुरुषों की मानवाधिकार से भिन्न नहीं है। भेदभाव भरा उत्तराधिकार प्रारूप जेंडर आधारित हिंसा ,आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं इत्यादि मानव अधिकार के अभिन्न अंग हैं एवं मानवाधिकार महिलाओं को निश्चित रूप से मिलने चाहिए।

(3) **उठवाल** ने अपने शोध में कहा कि नारी समस्या और अस्मिता सदैव भारत में चिंता का विषय रहा है। उनके अनुसार डॉ. भीमराव अंबेडकर संभवतः प्रथम ऐसे भारतीय सामाजिक चिंतक रहे हैं जिन्होंने सही मायनों में लिंग दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया। डॉ.भीमराव अंबेडकर के नारीवादी दृष्टिकोण में सभी भारतीय महिलाएं केंद्र में थी। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सामाजिक परिवर्तन के नए प्रतिमान स्थापित किए।

(4) **सिंह (2020)** ने अपने शोध प्रपत्र ***"द एड्वेंट ऑफ अंबेडकर इन द स्फेयर ऑफ इंडियन वूमेन क्वेश्चन"*** में यह कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर हृदय से एक नारीवादी थे। उन्होंने न सिर्फ दलित महिलाओं बल्कि उच्च वर्ग की महिलाओं के लिए भी समान रूप से कार्य किया। उदार नारीवादियों की कतार में डॉ. भीमराव अंबेडकर अग्रणी थे।

(5) **पटेल (2019)** ने ***"स्त्री विमर्शः एक सिद्धांत"*** में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्त्री समकालीन चिंतन धारा का प्रमुख अंग है। पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री का सिर्फ शोषण किया है। पुरुष अत्याचार के विरुद्ध नारी मुक्ति आंदोलन आवश्यक है।

(6) **पटेल** ने ***"स्त्री विमर्श बनाम महिला सुरक्षा की हकीकत"*** विषयक अपने शोध प्रपत्र में यह कहा कि स्त्री मुद्दों को लेकर होने वाली बहसों और रचनाओं के माध्यम से पितृसत्तात्मक कायदे कानून को तोड़ने की भरपूर कोशिश ने स्त्री समाज को कई महत्वपूर्ण अधिकार दिलाने में कामयाबी हासिल की है। भारतीय संविधान के

जनक डॉ भीमराव अंबेडकर ने इस संदर्भ में विशेष योगदान दिया है। स्त्री अस्मिता के बुनियादी सवालों को हल करने का प्रयास डॉ भीमराव अंबेडकर ने किया।

(7) **शुक्ला एवं अन्य (2019**) में अपने शोध कार्य ***"महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थितिः राजनीतिक सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति : राजनीतिक सशक्तिकरण के परिपेक्ष में उमरिया जिले के विशेष संदर्भ में"*** यह पाया कि महिला सशक्तिकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिससे महिलाओं के विकास के द्वार खुले हैं। महिला आरक्षण ने इस संबंध में उल्लेखनीय भूमिका अदा की है।

(8) **सेनगुप्ता एवं पांडे (2014)** में ***"स्वतंत्र भारत में नारी की स्थिति"*** विषयक शोध उल्लेख में यह विचार व्यक्त किया कि स्वतंत्रता पश्चात भारतीय नारी की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। आज की महिला घर की दीवार फांदकर देश के बहुआयामी विकास में अमूल्य योगदान दे रही है। आज की नारी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक आयामों में निरंतर प्रगतिशील है।

(9) **अशोक** ने ***"भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका"*** में यह उद्धृत किया कि वर्तमान राजनीति में महिलाओं की भागीदारी वैसी स्थिति में नहीं है जैसे 20 वर्ष पूर्व थी। राजनीति में पुरुषों ने कठोर एवं क्रूर व्यवहार किया है इसे बदलने की जिम्मेदारी महिलाओं की है। स्वतंत्रता उपरांत भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में उत्तरोत्तर विकास हुआ है। संविधान ने महिलाओं को समानता का दर्जा दिया है।

(10) **भारती (2022)** ने अपने शोध आलेख ***"भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी"*** में या उल्लेख किया कि महिला सशक्तिकरण भारतीय लोकतंत्र की मजबूती में मील का पत्थर साबित होगा। स्थानीय निकायों में आरक्षण ने महिला अधिकारों को जरूरी बल दिया है। बिहार पहला राज्य है जिसने 2006 से ही पंचायतों में 50 फीसदी महिला आरक्षण दिया है।

(11) **खेर (2022**) ने अपने शोध आलेख में यह पाया कि लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान किए गए हैं ,परंतु फिर भी आजादी के 75 वर्ष उपरांत महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। देश की संसद में आज भी महिला प्रतिनिधित्व बेहद कम है।

(12) **पांडे (2016)** ने भारत में ***नारीवाद*** शीर्षकीय शोध आलेख में यह कहा कि आज भारतीय नारीवाद का उद्‌घोष प्राचीन संस्कृति की ओर लौटो है,न कि रेडिकल विचारधारा है। प्राचीन काल में दैवीय रूप में पूजी जाने वाली नारी मध्यकाल में कुरीतियों से धूमिल होकर वर्तमान में संघर्षरत है।

(13) **रानी (2021)** ने अपने आलेख नारी विमर्श में यह कहा कि सृष्टि के परिवर्तन के साथ नारी का स्वरूप,उसकी भूमिकाएं भी परिवर्तित होती रही हैं परिणामतः नारी का रूप अपने विकास क्रम में एकरूपता

नहीं रखता। वैदिक काल में नारी की गरिमा मध्यकाल तक धूमिल हो गई है। वर्तमान समय में महिला अधिकारों को और बल दिए जाने की जरूरत है।

(14) **कमल** ने भारत में नारीवादी मुक्ति संघर्ष का संक्षिप्त इतिहास विषयक आलेख में यह कहा कि भारतीय प्राचीनतम संस्कृति में नारी को बेहद सम्मानित स्थान प्राप्त है ।भारत का नारी मुक्ति संघर्ष पश्चिम के नारी संघर्ष से भिन्न है। 19वीं सदी के अंतिम दो दशकों में स्त्रियों के नेतृत्व में स्त्री अधिकार आंदोलन, सामाजिक आंदोलन का रूप लेने लगे।

(15) **खान (2022)** ने अपने शोध आलेख जिसका शीर्षक ***"स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में अंबेडकर का दृष्टिकोण"*** में यह पाया कि वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलन और यूएनडीपी आदि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने में प्रभावी भूमिका निभाई है।डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारतीय महिलाओं को अधिकार देने की नींव की शुरुआत करी है। शिक्षा और आर्थिक तरक्की की नींव महिला अधिकारों में निहित है।

(16) **लिन एवं वांग (2023)** में अपने शोध प्रपत्र ***"नव उदारवाद और नवरूढ़िवादी चौराहे पर नारीवादी संकट पर विचार"*** में यह विचार दिया कि समकालीन नारीवाद वर्तमान में एक चौराहे पर है जिसे नव उदारवाद एवं नव रूढ़िवाद दोनों ही विचारधाराओं से ठोस हमलों का सामना करना पड़ रहा है। सच्ची लैंगिक समानता केवल कुछ लोगों के लिए व्यक्तिगत पसंद को बढ़ावा देना नहीं है बल्कि सभी महिलाओं की मुक्ति है।

शोध समस्या

- प्रस्तावित शोध के माध्यम से भारतीय नारीवाद में डॉ.भीमराव अंबेडकर के योगदान को समझने का प्रयास किया जायेगा ।
- तर्कसंगतता के मूल्य, धार्मिक हठधर्मितता से मुक्ति, प्रगति के विचार और पूंजीवाद के साथ प्रगति को जोड़ना भारतीय नारीवाद के संदर्भ में कितना प्रासंगिक है इसका अध्ययन किया जाएगा।
- आजादी के 75 वर्षों के उपरांत भी भारत के विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं एवं भारतीय संसद में महिलाओं के नगण्य प्रतिनिधित्व के पीछे के कारणों का अध्ययन किया जाएगा।
- स्वतंत्रता उपरांत भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक, सांस्कृतिक प्रगति एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर की सोच का योगदान का पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाएगा।

शोध का उद्देश्य

- भारतीय सामाजिक, राजनीतिक चिंतन में डॉ. भीमराव अंबेडकर नारीवादी विचारों का अध्ययन करना।
- बतौर संविधान निर्मात्री एवं विधि मंत्री के रूप में डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा महिला सशक्तिकरण और विमुक्तिकरण के प्रयासों को प्रकाश में लाना।
- नारियों के उत्थान के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर के नीतिगत सलाहों एवं संस्थानीकरण के प्रयासों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न :

- डॉ. भीमराव अंबेडकर को दलितों के मसीहा बताकर उनके योगदान को कम आंका गया है परंतु नारी उत्थान के लिए उनके विचार एवं उनके कार्य उन्हें महिलाओं के भी मसीहा बनाते हैं उनका यह पहलू अछूता रह गया हैं ?
- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने नारियों के सशक्तिकरण व सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता की पैरवी की तथा बतौर विधि मंत्री जो प्रयास किए वह बाकी चिंतकों से भिन्न करता है। इसी अंतर को दर्शाने का प्रयास किया जाएगा ?
- डॉ. भीमराव अंबेडकर के सामाजिक, आर्थिक विचारों में महिलाओं की सशक्तिकरण एवं विमुक्तिकरण पर डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार ,विजन एवं नीतिगत सलाह क्या रहे हैं ?
- नारियों के सशक्तिकरण एवं विमुक्तिकरण में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नीतिगत सलाहों के संस्थागतिकरण के लिए उनके क्या प्रयास रहें हैं ?

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन **गुणात्मक** प्रवृत्ति का है। जिसमें **ऐतिहासिक, वर्णनात्मक** एवं **विश्लेषणात्मक** पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीय स्रोत दोनों का प्रयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्रोत के रूप में डॉ भीमराव अंबेडकर के लेखन एवं भाषण को शामिल किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तक, पत्र पत्रिकाओं में छपे लेख, विभिन्न प्रकाशित और अप्रकाशित शोध कार्य और डिजिटल मीडिया का उपयोग किया जाएगा।

प्रमुख महिला हस्तियों से संपर्क कर महिला सशक्तिकरण पर राय प्राप्त करने हेतु **साक्षात्कार विधि** का भी सहारा लिया जाएगा।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत शोध अभिकल्प एक समुचित कार्य योजना तैयार कर अनुसंधान का क्रियान्वयन करेगा। शोध अभिकल्प के माध्यम से नारीवाद से संबद्ध विषयों पर चर्चा की जाएगी। शोध अभिकल्प इस बात का भी उत्तर देगा की नारीवाद का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन क्यों आवश्यक है। प्रस्तुत शोध कार्य भारत में आजादी के उपरांत नारीवाद के विस्तार पर जोर देते हुए आंकड़ों के संकलन पर कार्य करेगा। अध्ययन की समय – सीमा शोध अभिकल्प के अंतर्गत निर्धारित की जाएगी। शोध अभिकल्प नारीवाद के प्रतिदर्शन का प्रारूप भी निर्धारित करेगा। नारीवाद से संबद्ध विभिन्न आयामों के अध्ययन के उपरांत इसका विश्लेषण पद्धति तैयार करेगा । शोध अभिकल्प पूरे अध्ययन से संबंधित सभी पक्षों की विस्तृत योजना की रूपरेखा तैयार करेगा। शोध अभिकल्प के अंतर्गत निम्नलिखित उप – शोध प्रारूप तैयार किया जाएगा

- नारीवाद के अध्ययन के लिए विभिन्न इकाइयों के चयन की पद्धति की रूपरेखा तैयार किया जाएगा।
- यह प्रारूप उन शर्तों का उल्लेख करेगा जिसके तहत नारीवाद से संबंधित तथ्यों का अवलोकन किया जाएगा।
- नारीवाद से संबंधित शोध की इकाइयों का अध्ययन किया जाएगा और संकलित तथ्यों के विश्लेषण की पद्धति तय की जाएगी। अन्वेष्णात्मक शोध इस विश्लेषण में प्रयुक्त होगा।
- संबंधित साहित्य के अध्ययन के उपरांत अनुभवपूर्ण सर्वेक्षण, सूचनादाताओं का चयन, सूचनादाताओं से प्रश्न, प्रेरक घटनाओं का विश्लेषण आदि कार्य प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत संपन्न होगा।

नारीवाद के अध्ययन से नारीवादी दृष्टिकोण पर नया ज्ञान सृजित करने का प्रयास किया जाएगा। इसमें वस्तुनिष्ठता की जगह वैषयिकता पर ज्यादा जोर दिया जाएगा। गुणात्मक शोध के तहत नृजातीय, जमीनी स्तर पर किए गए शोध, मौखिक एवं लिखित इतिहास, सहभागी अवलोकन जैसे तथ्य

संकलन के उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा । प्रस्तुत नारीवादी शोध प्रविधि एक समग्र ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगा

शोध का महत्व

- 21वीं सदी के भारत में नई चुनौतियों के सामने भारतीय महिलाओं के सम्मान एवं अधिकारों को सुनिश्चित करने में यह शोध सहायक सिद्ध होगा।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध आधुनिक भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक नीतियां बनाने में सहायक सिद्ध होगा।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध आधुनिक भारत की पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना से महिलाओं को मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध होगा।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

संभावित अध्यायीकरण :

- प्रस्तावना

अध्याय –(1)– आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन में नारीवादः एक अवलोकन

अध्याय –(2)– डॉ. भीमराव अंबेडकरः जीवन परिचय

अध्याय –(3)– डॉ. भीमराव अंबेडकर का नारीवाद

अध्याय –(4)– नारी उत्थान एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रयास

अध्याय –(5)– 21वीं सदी में भारतीय नारियों के सशक्तिकरण में डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

- उपसंहार

ग्रन्थ–सूची

1. रावत हरिकृष्ण, (2007),उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष ,रावत पब्लिकेशंस ,जयपुर पृष्ठ संख्या 180–181

2. आर्य साधना, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, 2001 ,नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे, हिंदी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

3. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फेमिनिज्म,1986

4. आर्य साधना, निवेदिता मेनन , जिनी लोकनीता, 2001, नारीवादी राजनीतिक संघर्ष एवं मुद्दे,हिंदी माध्यम कार्यान्वियन निदेशालय ,दिल्ली विश्वविद्यालय पृष्ठ संख्या– 40

5. फ्इपक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, पृष्ठ संख्या 42–43

6. फ्रेडरिक एंगेल्स(1884), द ओरिजिन ऑफ द फैमिली प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड द स्टेट , हॉटींजेन ज्यूरिख ,जर्मनी

7. फ्इपक , आर्य साधना, निवेदिता मेनन ,जिनी लोकनीता, पृष्ठ संख्या– 33

8. मर्चेंट कॉरलियन, (1992), चौप्टर– 8 इन रेडिकल इकोलॉजी द सर्च फॉर ए लाइवेवल वर्ल्ड, न्यूयॉर्क ,रॉट्लीड़ज की संख्या –184

9. राल्टे लालरीनामी, (2012), द वर्ल्ड इज द बॉडी ऑफ गॉड इकोफेमिनिस्ट थियोलॉजिकल डिस्कोर्स विथ स्पेशल रेफरेंस टू ट्राइबल वूमेन इन इंडिया

10. शिवा वंदना (1999), कॉलोनियलिज्म एंड इवेल्यूएशन का मेसिलिनिस्ट कोरेस्ट्री, पृष्ठ संख्या– 41

11. हूज हू हॉफ वूमेन एंड द एनवायरनमेंट, न्छम्च रइट्रआइव्ड,15 अक्टूबर ,(2013)

12. परमार, शुभ्रा, नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या –53 से उद्धृत

13. कोमबाही रिवर, कलेक्टिव : ए ब्लैक फेमिनिस्ट स्टेटमेंट, (1974)

14. स्टीव जैक्सन ,जैकी जॉन्स ,(1998),कंटेंपरेरी फेमिनिस्ट थ्योरी, एडिनवर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस

15. आलेखः नारीवादी आंदोलन पृष्ठभूमि एवं विकासः वैश्विक संदर्भ शिवानी कनौजिया

16. पश्चिमी नारीवादी की अवधारणा और विभिन्न नारीवादी आंदोलनः आलेख, डॉ. नमिता सिंह

17. नैयर, श्रीमती उषाः ''ए. आई.डब्ल्यू. सी.एट अ ग्लांस, द फर्स्ट ट्वेंटी फाइव इयर्स (1927 – 1952)' इ –बुक

18. मानवाधिकारः नई दिशाएं, वार्षिक अंक – 19, सेंट जोसेफ प्रेस,नई दिल्ली, (2013)

19. नेशनल क्राईम रिकॉर्ड्स ब्यूरो

20. कौशांबी, दामोदर एवं धर्मानंद, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, (2009)